शिक्षक शिक्षा के लिए क्या ये तरीका काम करता है?

– फैज़ मोहम्मद कुरैशी

यह बड़ी बात है कि इतने शिक्षक यह मान रहे हैं कि बच्चों के सीखने में गति लाने के लिए उन्हें कुछ और प्रयास करने होंगे। वे अपने सीखने के लिए स्कूल समय के बाद इतना समय निकाल रहे हैं, अपने अनुभवों को साझा कर रहे हैं, दूसरों के अनुभवों से सीख रहे हैं।

मैं पिछले 30 साल से बच्चों को पढ़ा रहा हूं, मगर मुझे पहली बार समझ आया कि 2/5 (दो बटे पांच) ऐसा क्यों लिखते हैं और इसे ऐसे भी पढ़ाया जा सकता है। ये कहना था गणित विषय की स्वैच्छिक फोरम की बैठक में एक जिला स्तरीय प्रशिक्षक और शिक्षक का। इसी तरह से एक शिक्षिका ने अन्यत्र शिक्षकों की एक स्वैच्छिक चर्चा में कहा कि बच्चों को उनके अनुभवों से पढ़ाना चाहिए और उन्हें ककहरा सिखाने की जगह परिचित शब्दों से पढ़ाना चाहिए। ये मैंने सुना और पढ़ा था मगर किया नहीं था। मगर इस तरीके से पढ़ाने से बच्चे जल्दी और स्थायी रूप से सीखते हैं। इस तरह के कई अनुभव सामने आते हैं। जब शिक्षकों से पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों पर बात होती है तब ये बातें आती हैं कई स्वैच्छिक मंचों की चर्चाओं में जो देश भर में 300 से ज्यादा जगहों पर हर सप्ताह या पंद्रह दिनों में आयोजित की जाती हैं।

वैसे शिक्षकों को सीखने की क्या जरूरत है या उन्हें पढ़ाने की क्या जरूरत है? इस विषय पर कई विरोधाभासी बातें हैं। एक धारा कहती है कि वे शिक्षण करते हुए इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि इन्हें किसी तरह से खासतौर पर बाहरी व्यक्ति से सीखने की जरूरत नहीं है। वहीं एक धारा कहती है कि इस बदलते समय और सन्दर्भ में शिक्षण के नए तरीकों को उपयोग करने की दरकार है। समय ऐसे बदला है कि अब किसी भी कस्बे में कोई एक विशुद्ध भाषा नहीं बची है। अब हर व्यक्ति 2 या 2 से अधिक भाषाओं उपयोग करता है, यानी वह बहुभाषी व्यक्ति के रूप में विकसित होता है। वह थोड़ा बड़े होते ही तकनीकी का अधिक उपयोग करता है। अब उन तबकों के बच्चे स्कूलों में आ रहे हैं जिनके माता–पिता कभी स्कूल नहीं गए या जो सदियों से हाशिए पर थे, जिनका स्कूली शिक्षा से कभी कोई ज्यादा सरोकार नहीं रहा है। इसके इतर हर वर्ष जारी होने वाले आंकड़े कहते हैं कि

स्कूली शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। कुछ मान्यताएं हैं जो सीखने को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती रही हैं जैसे बगैर डर के सीखा नहीं जा सकता, बच्चों को फेल करना जरूरी है आदि–आदि।

शिक्षा के गिरते स्तर को ऊपर कैसे उठाया जाए। सभी बच्चों में अकादमिक शिक्षा में बुनी हुई सामाजिक संदर्भों के प्रति जवाबदेही, संवेदनशीलता, सामाजिक समता, न्याय आदि राष्ट्रीय लक्ष्यों की समझ कैसे विकसित की जाए? इन बातों की ओर बढ़ने के लिए सभी छात्रों तक पहुंच पाना किसी अशासकीय संस्था के बस की बात नहीं है, क्योंकि मात्र मध्यप्रदेश में ही कक्षा 1 से 10 के बीच 2 करोड़ से ज्यादा छात्र हैं। इसलिए शिक्षक–शिक्षा एक ऐसा माध्यम प्रतीत होता है जिसके मार्फत अधिकतम छात्रों तक अकादमिक गुणवत्ता और उपरोक्त समझ को पहुंचाया जा सकता है।

शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं में जरूरत के आधार पर लगातार सुधार करते रहे हैं । अनेक शिक्षण प्रक्रिया में सिर्फ याद कराकर परीक्षा में पास कराने के उद्देश्य से आगे की ओर बढ़े हैं। इन सबके लिए शिक्षकों को लगातार अपडेट होने की जरूरत दिखाई देती है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में लगातार प्रयोग हुए। इन प्रयोगों की सीख और कई लोगों के अनुभवों से शिक्षकों की अपनी जगह बनाने का ख्याल विकसित हुआ। एक ऐसी जगह जहां आत्म–चिंतन करने और कुछ नया सीखने के अवसर हों, जहां चिंतन–मनन के साथ ही पुस्तकालय व अन्य शैक्षणिक संसाधनों का उपयोग कर पाएं। सबसे खास बात यह है कि इस जगह पर सभी शिक्षक अपनी मर्जी और समय से आ पाएं, क्योंकि सैद्धांतिक रूप से हम सीख वहीं सकते हैं जहां हमारी रुचि और पसंद का माध्यम हो। ये तो हमारी समझ और खुशफहमी थी कि इससे शिक्षा में हम बेहतर कान्ट्रीब्यूट कर पाएंगे। मगर इसकी शिक्षकों में कितनी स्वीकार्यता होगी यह एक बड़ा सवाल था।

हमारा मानना था कि इस तरह के केंद्र अपने कुछ वर्षों के प्रयासों से शिक्षा में अपेक्षित योगदान दे पाएंगे। ये तरीका काम करता है या नहीं यह भी 2–3 वर्षों में पता चल पाएगा। क्योंकि यह काम सीधे बच्चों के साथ नहीं शिक्षकों के साथ और उनके माध्यम से बच्चों के साथ किया जाना था। हमने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शासकीय शिक्षकों के लिए पहला केंद्र एक शासकीय विद्यालय में 2–3 वर्ष पहले बड़े जोशोखरोश से शुरू किया। इस केंद्र में पुस्तकालय, ई–लर्निंग मटीरियल, टीचिंग लर्निंग मटीरियल और विषयों के अकादमिक व्यक्तियों की उपलब्धता सुनिश्चित की।

शिक्षकों को जानकारी देने के लिए स्कूलों में जाकर इस विचार के बारे में बताया, इन्हें किसी अकादमिक आयोजन के पहले फोन–एसएमएस–व्हाट्सएप किए, फिर आयोजन वाले दिन वही प्रक्रिया दोहराई। महीने भर का कैलेंडर बनाया, जिससे शिक्षकों को आने वाले कार्यक्रमों की जानकारी हो। यह सब करने के बाद पहले आयोजन वाले दिन 15–16 शिक्षक आए। हम खुश थे। अगली बार 19–20 आए, हम और भी खुश हुए। फिर यह संख्या 2 से 5 हो गई और लगातार यही बनी रहने लगी। इससे हमारे समूह में निराशा पनपने लगी और इसकी वाजिब वजह भी थी। समझ आया कि भोपाल जैसे शहर में स्कूल समय के बाद हर व्यक्ति की बहुत व्यस्तताएं हैं। अब क्या करें?

अब हमने अपने काम के तरीके में बदलाव किए। पहला बदलाव था कि हमने सीधे पाठयपुस्तक के पाठों पर शिक्षकों के साथ काम करना शुरू किया। यानी रोजमर्रा के कंटेंट पर काम। दूसरा बदलाव करने के तरीके से जुड़ा था वह यह कि हमने विभिन्न विषयों पर आधारित 5 से 15 दिन के कोर्स बनाए और शिक्षकों के साथ संचालित किए। गर्मी और सर्दी की छुट्टियों में शहर से बाहर आवासीय कैम्प आयोजित किए। इन सभी आयोजनों में खास बात हमारे मूल सिद्धांत से निकली थी। वह यह कि किसी भी अकादमिक आयोजन में शिक्षक स्वेच्छा से ही आएंगे। इन्हें किसी शासकीय आदेश से आमंत्रित नहीं किया जाएगा। यह कार्यक्रम स्कूल समय के बाद ही आयोजित होंगे, वगैरह।

इन केन्द्रों पर पिछले दो–तीन वर्षों में 100 से ज्यादा गतिविधियां आयोजित की गई हैं। इन गतिविधियों के अनुभवों से बड़ों के सीखने के कुछ सिद्धांत निकले हैं या मजबूत हुए हैं। पहला यह कि रूचि बनाने पर ही शिक्षक या बड़े सीखने के लिए आते हैं। दूसरा, किसी एक माध्यम के चलने से सीखने में नीरसता आती है इसलिए आपको अपनी प्रक्रियाओं में सिखाने के नए तरीके उपयोग करने होंगे। तीसरा, जो बताया जा रहा है वह सीधे काम का हो यानी कक्षाओं में उपयोग किया जा सके। चौथा, कक्षा में क्या करना है इसी से काम शुरू किया जाए और उसके बाद क्यों पर आया जाए। पांचवां यह कि, जो भी इस केन्द्र पर चर्चा या गतिविधि में आये वह किसी न किसी शासकीय कार्यक्रम से जुड़ाव रखता हो यानी विरोधाभासी न हो।

आज के समय में इन प्रक्रियाओं में भोपाल के लगभग 2000 से ज्यादा शिक्षकों ने एक–दो बार सहभाग किया है। लगभग 200 से ज्यादा शिक्षक ऐसे हैं जिन्होंने 4 से 5 बार सहभाग किया है। वैसे शिक्षकों की ये संख्या काफी कम है क्योंकि भोपाल में ही 4000 से ज्यादा शासकीय प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के शिक्षक हैं। साथ ही सभी शिक्षकों के पास स्कूल के अलावा घर की जिम्मेदारियां भी हैं, खास तौर पर महिलाओं के पास तो दोहरी जिम्मेदारियां है। जैसे स्कूल से निकलते ही शाम के भोजन की व्यवस्था, खुद के बच्चों को पढ़ाना, सामाजिक–पारिवारिक जिम्मेदारियां वगैरह।

उपलब्धि के तौर पर यह बड़ी बात है कि इतने शिक्षक यह मान रहे हैं कि बच्चों के सीखने में गति लाने के लिए उन्हें कुछ और प्रयास करने होंगे। वे अपने सीखने के लिए स्कूल समय के बाद इतना समय निकाल रहे हैं। अपने अनुभवों को साझा कर रहे हैं, दूसरों के अनुभवों से सीख रहे हैं। यह प्रक्रिया शुरू करते समय कई शिक्षकों, शिक्षा विभाग के अधिकारियों और आमजन का यह मानना और कहना था कि शिक्षकों को इस तरह के काम में कोई रुचि नहीं होगी। वे पढ़ाने तो स्कूल में जाते नहीं हैं, आपके केन्द्रों पर वो भी स्कूल के बाद क्या आएंगे! अब हमारा अनुभव कहता है कि शिक्षक आते हैं, वे सीखने का प्रयास करते हैं।

वैसे अभी यह कहा नहीं जा सकता कि इन प्रक्रियाओं में शामिल होने से विद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया बिलकुल बदल गई है, बच्चे जादुई रूप से ताबड़तोड़ सीखने लगे हैं। मगर जिन शिक्षकों से हमारा अधिक जुड़ाव हुआ है या जिनकी कक्षाओं को हमने नजदीक से देखा है। उनके बारे में यह तो कहा ही जा सकता है कि उन्होंने शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, सन्दर्भ और समझ को नए नजरिये से देखना, खोजना, सवाल करना आदि शुरू किया है। अपने शिक्षण के तरीके को सामूहिक पढ़ाने से आगे ले जाकर, प्रत्येक बच्चे के सीखने से समझना शुरू किया है। बच्चे को समझते हुए कक्षा की प्रक्रियाओं को नई दिशा में ले जाने की ओर बढ़ना शुरू किया है।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, भोपाल मध्यप्रदेश से जुड़े हैं।)

प्रवाह हेतु आमंत्रण

आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पतों पर प्रेषित करें।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

आनंद टॉवर, द्वितीय तल, 2 सहस्त्रधारा रोड, सहस्त्रधारा क्रॉसिंग, देहरादून उत्तराखण्ड

फोन/फैक्स : 0135 – 2782864

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

कुड़ियाल भवन, भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी–249193
फोन/फैक्स : 01374–222505

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

वार्ड नं. 3, नियर गुरुद्वारा, दिनेशपुर उधमसिंह नगर

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

लोअर मॉल रोड, कर्नाटक खोला, नियर डायट, अल्मोड़ा–263601 (उत्तराखण्ड)